विश्व हेपेटाइटिस दिवस पर संसद भवन में 'लिवर एंड बायलरी साइंसेज' तथा 'एयरपोर्ट्स अथारिटी ऑफ इंडिया' द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'एम्पैथी कॉन्क्लेव, 2020'

मुझे खुशी है कि प्रत्येक वर्ष 28 जुलाई को मनाये जाने वाले विश्व हेपेटाइटिस दिवस के अवसर पर, आज मैं वर्चुअल माध्यम से आप सबके साथ हूँ। इस दिन वायरल हेपेटाइटिस के बारे में जागरूकता बढ़ाने और वास्तविक अर्थों में बदलाव लाने के उद्देश्य से सम्पूर्ण विश्व को एक थीम के तहत एकजुट करने के प्रयास किये जाते हैं।

हेपेटाइटिस वैश्विक स्तर पर लोगों को प्रभावित करने वाली एक बहुत बड़ी स्वास्थ्य संबंधी चुनौती है। इससे बचाव किया जा सकता है और इसका इलाज भी संभव है, परन्तु फिर भी विश्वभर में लाखों लोग इस विषाणु जनित बीमारी से संक्रमित हैं। अफ्रीका और एशियाई महाद्वीप के देशों में यह बीमारी बहुत फैली हुई है और इनमें से कई देशों में इस बीमारी की जांच और उपचार कराना लोगों की आर्थिक क्षमता के बाहर होता है। यह गंभीर चिंता का विषय है कि भारत में 1.5 करोड़ लोग लिवर की बीमारी से पीड़ित हैं। वर्ष 2020 के लिए, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने *'फाइंड द मिसिंग मिलियन्स'* थीम रखा है। इस मिशन पर काम करने से निस्संदेह विश्व में असंख्य लोगों को इस बीमारी की चपेट में आने से बचाया जा सकेगा।

देवियो और सज्जनो यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि एक दशक पूर्व स्थापित यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस), यकृत एवं पित्त सम्बन्धी रोगों के निदान, प्रबंधन एवं अत्याधुनिक प्रशिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रयासरत है।

आपके द्वारा चलाये जा रहे अत्यंत महत्वपूर्ण 'संवेदना अभियान (एंपैथी कैम्पेन)' के तहत आप जनता को हेपेटाइटिस के बारे में जानकारी प्रदान करके उन्हें उससे लड़ने में सक्षम बना रहे हैं और इस बीमारी से पीड़ित रोगियों को जिस प्रकार के भेदभाव का सामना करना पड़ता है उसके बारे में जागरूकता भी बढ़ा रहे हैं। गत वर्ष, मैं आपके इस अभियान का हिस्सा बना था और यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष मैं इस संगोष्ठी का मुख्य अतिथि हूँ।

हम सभी जानते हैं कि वैश्विक महामारी कोविड-19 ने हमारे सामने अनेक चुनौतियां और मुश्किलें पैदा कर दी हैं। डॉक्टरों, नर्सों और अन्य सभी चिकित्साकर्मियों ने नि:स्वार्थ भाव से और पूरी ईमानदारी से अपनी सेवाएँ दी हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि वे सही अर्थों में योद्धा हैं। आपकी और आपके कार्य की सभी जगह प्रशंसा की जा रही है। भारत अपने डाक्टरों और नर्सों को सलाम करता है, जिन्हें आज पूरे विश्व में अपनी असाधारण स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

मैं कोविड महामारी के खिलाफ लडते हुए अपनी जान गँवाने वाले चिकित्साकर्मियों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अपनी संस्कृति में, हम आपको 'धरती का भगवान' मानते हैं।

मित्रो, जैसा कि हम सभी जानते हैं, लिवर मनुष्य के शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग होता है और इसके बिना व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता।

आज मैं आपको यह बात याद दिलाना चाहता हूँ कि चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता और वाग्भट्ट के अष्टांग संग्रह जैसे प्राचीन ग्रन्थों में स्वास्थ्य से जुड़ी हुई बहुमूल्य जानकारी है। चरक संहिता में कुछ विशेष प्रकार के खाद्य पदार्थों को लिवर

के लिए हानिकारक बताया गया है। हमारे शास्त्र हमें हमारे लिवर और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए शाकाहारी भोजन और फलों का सेवन करने की सलाह देते हैं।

हमारी संस्कृति हमें अपने दैनिक जीवन में अपने लिवर का ख्याल रखने की सीख देती है लेकिन हमें अपनी पारंपरिक मान्यताओं और हमारे डाक्टरों के नए दिशानिर्देशों का भी निरंतर पालन करना होगा।

मैं इस ई-संगोष्ठी के लिए 'कोविड काल में अपने लिवर को स्वस्थ रखें' विषय का चयन करने के लिए आईएलबीएस की सराहना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि इससे लोगों के बीच अपेक्षित जागरूकता फैलाने में सहायता मिलेगी।

भारतीय संसद, आम आदमी की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। सदनों में विचार-विमर्श और वाद-विवाद, कानून-निर्माण और वित्तीय मुद्दों तक सीमित नहीं है। राष्ट्रीय हित के अन्य मुद्दों जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, इत्यादि पर चर्चा के लिए भी पर्याप्त समय दिया जाता है। वर्तमान केंद्रीय बजट में, 65,000 करोड़ रूपये से अधिक राशि स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय को आवंटित की गई है। मौजूदा समय में चिकित्सा संबंधी शोध का महत्व समझते हुए, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग को 2,000 करोड़ रुपये आबंटित किए गए हैं। जैसा कि आप जानते हैं, आयुष्मान भारत योजना निश्चित रूप से भारत में बढ़ रही स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में प्रमुख योगदान देगी। निजी क्षेत्र भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपनी सहभागिता बढ़ा रहा है।

नागरिकों का स्वास्थ्य और स्वच्छता वे मूल आधार हैं, जिनसे एक राष्ट्र की प्रगति और खुशहाली संभव होती है। सांसदगण नागरिकों की स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा सुविधाओं और आस-पास की स्वच्छता संबंधी स्थितियों तथा पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर अपनी बात हमेशा से रखते रहे हैं।

संसद ने महिलाओं, बच्चों, वृद्धजनों और वंचितों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा और मानक, महामारी और आपदा प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य, इत्यादि से संबंधित मुद्दों पर अनेक कानून बनाए हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण से संबंधित संसदीय स्थायी समिति भी मौजूद है, जो स्वास्थ्य मंत्रालय की पुरानी नीतियों की जांच करती है।

हालांकि, हमारे जैसे विशाल देश में, हमें एक सुदृढ़ स्वास्थ्य प्रणाली विकसित करने के लिए नए तरीके और साधन खोजने होंगे। मैं हेपेटाइटिस के प्रसार को रोकने के लिए तुरंत और तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता को समझता हूं। आज स्वास्थ्य विशेषज्ञों, कानून-निर्माताओं और सरकार के प्रतिनिधियों को एकजुट होकर इस पुरानी बीमारी को दूर करने के प्रभावी उपायों पर चर्चा करने की जरूरत है।

हमें नए कानून लाने की संभावना तलाश करनी चाहिए, जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में हेपेटाइटिस से पीड़ित लोगों के प्रति होने वाले किसी भी तरह के भेदभाव को रोक सके।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि भारत सरकार ने वायरल हेपेटाइटिस की रोकथाम के लिए निवारक और उपचारात्मक उपाय किए हैं। इस बीमारी को रोकने के लिए स्वच्छ जल और भोजन तथा जन स्वास्थ्य उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करना आवश्यक विशिष्ट उपाय हैं।

जुलाई, 2018 में प्रारंभ किया गया राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीएचसीपी) भारत में वायरल हेपेटाइटिस की रोकथाम और नियंत्रण के लिए की गई एक एकीकृत पहल है, जिसका उद्देश्य 2030 तक संयुक्त राष्ट्र सतत

विकास लक्ष्य को प्राप्त करना है। यह कार्यक्रम लोगों को हेपेटाइटिस बी तथा हेपेटाइटिस सी के विषय में जागरूकता पैदा कर रहा है तथा सभी के लिए निःशुल्क दवाइयां और नैदानिक सुविधाएं प्रदान कर रहा है।

इसके अलावा, यकृत रोगों में स्वच्छता और साफ-सफाई भी रामबाण इलाज है। इस संबंध में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करना एक प्रमुख भूमिका हो सकती है।

***जल जीवन मिशन* का उद्देश्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण और शहरी परिवारों को *हर घर जल (पाइपलाइन द्वारा जलापूर्ति) प्रदान करना है। हाल ही में, कोटा निर्वाचन क्षेत्र से एक सांसद के रूप में अपने निरंतर प्रयासों से, मैंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में ग्रामीण परिवारों को पाइपलाइन के माध्यम से जल उपलब्ध कराने के लिए जल जीवन मिशन के तहत वित्तीय स्वीकृति की सुविधा प्रदान करवाई है।* देश के हर कोने में *स्वच्छ भारत* पहल को लोकप्रिय बनाने के लिए भी लगातार प्रयास किए जाने चाहिए।**

देवियो और सज्जनो, जहां तक हेपेटाइटिस बी का संबंध है, हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में इस रोग के टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध है। लेकिन इसके साथ ही यह आवश्यक है कि देश की अधिकतम आबादी को इसका लाभ मिले।

मेरा यह मानना है कि सभी संसद सदस्य अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र में बच्चों के लिए हेपेटाइटिस बी का टीकाकरण सुनिश्चित करने के लिए लोगों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। माननीय सदस्य लोगों को इससे जुड़ी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक धारणा से उबारने के लिए उन्हें इस संबंध में शिक्षित और जागरूक भी कर सकते हैं। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की दृष्टि से की गई ई-स्वास्थ्य पहलों को लोकप्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है।

मैं एक बार पुनः सभी चिकित्सा और स्वास्थ्य कर्मियों का राष्ट्र को सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता हेतु आभार प्रकट करता हूं। मैं यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस) के उन सभी चिकित्सकों, नर्सों और कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ जो भारत को **"वायरल हेपेटाइटिस मुक्त"** देश बनाने की दिशा में अपनी अनवरत सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

धन्यवाद।